Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 16, Issue 2 – 2026

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT
UGC CARE I

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना : लोकजीवन और मानवीय मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन"

रेनू यादव	डॉ. गुड्डू कुमार
शोधार्थी, हिन्दी साहित्य	आचार्य, हिन्दी विभाग
जे.एस.विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद	जे.एस.विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद
yadavsmart2009@gmail.com	

सारांश -

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के उत्सव तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह लोकजीवन, मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण तथा सामाजिक यथार्थ के व्यापक संदर्भों में विकसित हुआ। इस काल के साहित्यकारों ने यह अनुभव किया कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी जनता, उसकी संस्कृति और उसके मानवीय संबंधों में निहित होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में फणीश्वरनाथ रेणु तथा धर्मवीर भारती के साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण किया गया है। रेणु के साहित्य में जहाँ ग्रामीण भारत की जीवंतता, सामाजिक संरचना और जनमानस की वास्तविकता के माध्यम से राष्ट्र का एक जमीनी स्वरूप उभरकर सामने आता है, वहीं भारती के साहित्य में मानवीय संवेदनाओं, नैतिक संघर्षों और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का एक आत्मिक और दार्शनिक स्वरूप दिखाई देता है। इस प्रकार यह शोध पत्र यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास बहुआयामी है।, जिसमें लोक और मानवीय मूल्य दोनों का समान महत्व है।

की-वर्ड्स -

राष्ट्रीय चेतना, स्वातंत्र्योत्तर, हिन्दी साहित्य, लोकजीवन, मानवीय मूल्य, रेणु, धर्मवीर भारती।

भूमिका -

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्र के स्वरूप और उसकी चेतना में गहरा परिवर्तन आया। स्वतंत्रता से पूर्व जहाँ राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष था, वहीं स्वतंत्रता के बाद यह चेतना राष्ट्र के आंतरिक

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

स्वरूप, उसकी सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान तथा मानवीय मूल्यों के पुनर्स्थापन की और उन्मुख हो गई। इस काल के साहित्यकारों ने यह समझा कि राष्ट्र केवल राजनीतिक सीमाओं का नाम नहीं है। बल्कि यह उन लोगों, उनकी संस्क़ृति, उनके जीवन मूल्यों और उनके आपसी संबंधों का समुच्चय है, जो उसे जीवंत बनाते हैं।

फणीश्वर नाथ रेणु ने अपने उपन्यासों और कहानियों में ग्रामीण भारत के जीवन को अत्यंत सजीव रूप से प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए "मैला आँचल" में वे लिखते हैं-

"इस धरती पर हर आदमी की अपनी कहानी है।"

जो यह संकेत करता है कि राष्ट्र की पहचान उसके आम लोगों के जीवन से निर्मित होती है।

इसी प्रकार धर्मवीर भारती के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप अधिक आंतरिक और मानवीय है। उनकी प्रसिद्ध कृति "अंधा युग" में नैतिक संकट और मानवीय मूल्यों का विघटन इस बात की ओर संकेत करता है कि राष्ट्र का वास्तविक निर्माण केवल बाहरी संरचनाओं से नहीं, बल्कि आंतरिक नैतिक चेतना से होता है।

मुख्य विवेचन

लोकजीवन के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का विस्तार -

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप अत्यंत जमीनी, जीवंत और लोकजीवन से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपने लेखन में ग्रामीण भारत की वास्तविकता, उसकी समस्याएँ, उसकी संस्कृति और उसकी जीवनशैली को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके लिए राष्ट्र का अर्थ केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि उन गाँवों, खेतों, मेलों, परंपराओं और लोगों का समूह है, जो उसकी आत्मा का निर्माण करते हैं।

मेला आँचल में रेणु ने जिस प्रकार ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है, वह यह स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय चेतना का वास्तविक स्वरूप तभी समझा जा सकता है, जब हम उस समाज की जड़ों तक पहुँचे, जहाँ राष्ट्र की नींव स्थित है। उनकी दृष्टि में राष्ट्रीय चेतना का अर्थ है - जनता के जीवन को समझना, उसकी समस्याओं को पहचानना और उसके विकास के लिए प्रयास करना।

मानवीय मूल्यों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना -

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

धर्मवीर भारती के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप अधिक दार्शनिक, नैतिक और मानवीय है। उन्होंने अपने लेखन में यह स्पष्ट किया है कि राष्ट्र का निर्माण केवल, भौतिक प्रगति से नहीं होता, बल्कि इसके लिए नैतिक मूल्यों, संवेदनाओं और मानवीय संबंधों का सुदृढ़ होना आवश्यक है।

"अंधा युग" में वे युद्ध के बाद की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं -

"जब मनुष्य अपने मूल्यों से भटक जाता है।
तब विनाश निश्चित हो जाता है।"

यह कथन इस बात की ओर संकेत करता है कि राष्ट्रीय चेतना का वास्तविक स्वरूप तभी पूर्ण हो सकता है, जब उसमें नैतिकता और मानवीयता का समावेश हो।

राष्ट्रीय चेतना का समन्वित स्वरूप : लोक और मूल्य -

रेणु और धर्मवीर भारती के साहित्य का संयुक्त अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप बहुआयामी है। जहाँ एक ओर रेणु के साहित्य में राष्ट्र का जमीनी और सामाजिक स्वरूप उभरता है, वहीं भारती के साहित्य में राष्ट्र का आंतरिक और नैतिक स्वरूप दिखाई देता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय चेतना का वास्तविक स्वरूप इन दोनों आयामों के समन्वय से ही पूर्ण होता है। जहाँ लोकजीवन की वास्तविकता और मानवीय मूल्यों की गहराई एक साथ मिलकर राष्ट्र की सम्पूर्ण छवि प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय चेतना और मानवीय मूल्य

राष्ट्रीय भावना का यह स्वरूप मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा इस काल की प्रमुख विशेषता रही। साहित्यकारों ने समानता न्याय बंधुत्व और मानव गरिमा को राष्ट्र निर्माण का आधार माना। राष्ट्रीय चेतना का यह स्वर लोकजीवन के विविध पक्षों में दिखाई देता है, जहाँ व्यक्ति और समाज के मध्य सामजंस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है इस दृष्टि से हिंदी साहित्य केवल राष्ट्रप्रेम का उद्देश्य नही करता, बल्कि एक ऐसे समाज की कल्पना भी प्रस्तुत करता है जो मानवीय संवेदनाओं और नैतिक आदर्शो पर आधारित है।

काव्य पंक्ति-

मानव का सम्मान जहाँ हो, वही राष्ट्र महान् हो
जन-जन के सुख-दुख में जो साथ, वही पहचान हो।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 16, Issue 2 – 2026

मैथिलीशरण गुप्त

लोकगीतों, लोकगाथाओं तथा लोककथाओं में मातृभूमि के प्रति अनुराग, त्याग, परिश्रम, साहस, और सामाजिक एकता की भावना बार-बार अभिव्यक्ति होती हो ग्रामीण समाज के लोकगीतों में खेत, खलिहान, नदी, पर्वत और गाँव मात्र प्राकृतिक तत्व नहीं है बल्कि वे उस सांस्कृतिक संसार के प्रतीक है, जिससे मनुष्य अपनी पहचान प्राप्त करता है। इस प्रकार लोकसाहित्य व्यक्ति को अपनी जडों से जोडते हुए व्यापक राष्ट्रीय बोध का निर्माण करता है।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वह नर नही, नर पशु निरा हो, और मृतक समान है।

मैथलीशरण गुप्त

राष्ट्रीय चेतना का विकास तब और अधिक सशक्त दिखाई देता है जब साहित्य मनुष्य को उसके कर्तव्यों का बोध कराता है अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में यह भाव व्यक्त हुई है कि व्यक्ति का कल्याण समाज के कल्याण से जुडा है और समाज की उन्नति राष्ट्र की प्रगति का आधार बनती है इस प्रकार हिन्दी साहित्य में राष्ट्रों चेतना और मानवीय मूल्य परस्पर पूरक तत्वों के रूप में उपस्थित ही, जो जनजीवन को दिशा प्रदान करते है तथा सांस्कृतिक निरन्तरता को बनाए रखते है।

निष्कर्ष -

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। जिससे समाज के विभिन्न पक्षों - लोकजीवन, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक परंपराएँ और मानवीय संबंध का समावेश होता है। यह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साहित्यकारों ने राष्ट्र को केवल राजनीतिक दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उसे एक जीवंत और संवेदनशील इकाई के रूप में समझा, जिसमें व्यक्ति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में जहाँ ग्रामीण जीवन की वास्तविकताएँ, सामाजिक समस्याएँ और लोक संस्कृति के विविध रूप सामने आते हैं, वहीं धर्मवीर भारती के साहित्य में नैतिकता, आत्मचिंतन और मानवीय द्वंद्व के माध्यम से राष्ट्र की गहरी परतों को समझने का प्रयास किया गया है। इन दोनों दृष्टिकोणों का संयुक्त अध्ययन यह संकेत देता

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

है कि राष्ट्रीय चेतना का निर्माण केवल बाहरी विकास से नहीं, बल्कि आंतरिक जागरूकता और सामाजिक संवेदनशीला से भी होता है। वर्तमान समय में, जब समाज तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है और अनेक नई चुनौतियाँ सामने आ रही है, यह आवश्यक हो जाता है कि हम साहित्य के माध्यम से उन मूल्यों को पुन: समझे और अपनाएँ, जो एक सशक्त और संतुलित समाज के निर्माण में सहायक हो सकते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना न केवल अपने समय की परिस्थितियों का प्रतिबिंब है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में भी कार्य करती है। जो उन्हें समाज के प्रति अधिक सजग, उत्तरदायी और संवेदनशील बनने की प्रेरणा देती है। जो साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा प्रदान करती है और उसे अधिक जागरूक, संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने का कार्य करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची -

(1) रेणु, फणीश्वरनाथ (1954) - "मैला आँचल", राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 128

(2) भारती, धर्मवीर (1954) - "अंधा युग", इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 58

(3) गोयल, डॉ.निशा (2025) - "हिन्दी का राष्ट्रीय काव्य" साहित्य भवन पब्लिकेशन, उत्तरप्रदेश, पृष्ठ संख्या 15, 17

(4) जैन, डॉ. शांति (2017) - "लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना" प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 30, 33

(5) गुप्ता, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (2024) - "राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति" प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 4, 7, 11

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved